एक घटना ने जीवन बदले

चयन सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Ek Ghatna Ne Jeevan Badle (One Incident Changed the Life)
Cover Page Picture : Mahatma Buddha
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of India

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

इतिहास सीरीज़ 5

लोग जिनके एक घटना ने जीवन बदले 7

1 विश्वामित्र जी 9

2 वाल्मीकि जी 20

3 महात्मा बुद्ध 27

4 सम्राट चन्द्रगुप्त 32

5 महाकवि कालीदास 35

6 राजा भर्तृहरि 44

7 संत तुलसी दास 51

8 स्वामी विवेकानन्द 55

9 प्रभुपाद जी 59

इतिहास सीरीज़

प्रारम्भ में हमने एक सीरीज़ प्रारम्भ की थी "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिसके अन्दर हमने संसार के कई देशों की लोक कथाऐं और दंत कथाऐं प्रकाशित की थीं। ऐसा करते समय देखा गया कि एक तरह की कहानी कई देशों में कही जा रही है तो एक और सीरीज़ बनायी गयी "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कहानियॉ शामिल की गयी थीं जिनकी तरह की कहानियॉ और दूसरे देशों में भी उपलब्ध थीं। इस सीरीज़ में **20** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। इसके बाद लोक कथाओं की कुछ क्लासिक पुस्तकों का भी अनुवाद किया गया। इनकी संख्या भी **30** से ऊपर पहुॅच गयी।

अब यह एक नयी सीरीज़ प्रारम्भ की जा रही है "इतिहास" नाम की सीरीज़। यह बहुत ही मजेदार सीरीज़ है। इस पुस्तक में दी गयी कहानियॉ लोक कथाऐं नहीं हैं और न ही कहानियॉ हैं बल्कि सच्ची घटनाऐं हैं। इतिहास हमारे उस आधुनिक जीवन शैली की नींव डालता है जिस पर आज हम खड़े हुए हैं और जिस पर हमारा भविष्य बनता है। इतिहास हमारी पृथ्वी का भूगोल बनाता है। इतिहास हमारा समाज बनाता है। इतिहास हमारी भाषा बनाता है। इतिहास हमारी सभ्यता और संस्कृति बनाता है।

पर यह पुस्तकें इतिहास की भी नहीं है क्योंकि इसमें ऐसी एतिहासिक घटनाऐं भी नहीं दी गयीं हैं जो आपको इतिहास की पुस्तकों में मिलें। यहॉ केवल वही विषय सामग्री दी गयी है जो इधर उधर मिलनी कठिन है या नहीं भी मिल सकती है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब पुस्तकें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो इसलिये ये कहानियॉ यहॉ सरल बोलचाल की हिन्दी भाषा में लिखी गयी है। कहीं कहीं विदेशी विषय सामग्री भी है तो उनमें उनके चरित्रों और स्थानों के नाम सही उच्चारण जानने के लिये अंग्रेजी में फुतनोट्स में दिये गये हैं। इसके अलावा भी बहुत सारे शब्द भारतीयों के लिये नये होंगे वे भी चित्रों द्वारा समझाये गये हैं।

ये सब पुस्तकें "इतिहास सीरीज़ं" के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में आप सबके ज्ञान के घेरे को बढ़ायेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोग जिनके एक घटना ने जीवन बदले

इस पुस्तक से पहले हम "इतिहास सीरीज़" की सीरीज़ में कई पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इसकी पहली पुस्तक[1] में हमने तुम्हें अफ्रीका महाद्वीप के इथियोपिया देश के विषय में कुछ ऐसी अजीबो गरीब बातें बतायी थीं जो आसानी से पढ़ने के लिये नहीं मिलतीं। इसकी दूसरी पुस्तक[2] में हमने तुम्हें देश विदेश के राजा और कुछ बड़े लोगों के जीवन की ऐसी व्यक्तिगत घटनाओं के बारे में लिखा था जो आम लोगों को मालूम नहीं हैं।

और अब यह है इस कड़ी की अगली पुस्तक। इस पुस्तक में हम कुछ ऐसे लोगों के बारे में लिख रहे हैं जिनकी ज़िन्दगी की एक घटना ने उनकी अपनी पूरी ज़िन्दगी ही बदल दी। वे कुछ और थे और उस घटना के वाद कुछ और ही हो गये। पिछली पुस्तकों "इतिहास–तेरह महीने वाला अकेला देश" और "इतिहास–हमारे वैज्ञानिक" की तरह से, क्योंकि यह पुस्तक भी इतिहास की नहीं है इसलिये इसमें भी बहुत सारी ऐतिहासिक घटनाऐं नहीं दी गयीं हैं बल्कि हर एक की ज़िन्दगी की केवल एक ऐसी घटना दी गयी है जिसने उस आदमी की पूरी ज़िन्दगी ही बदल दी।

इस प्रकार इस पुस्तक में दी गयी कहानियॉ न तो लोक कथाऐं हीं हैं और न ही उनमें कही गयी कहानियॉ हैं बल्कि सच्ची घटनाऐं है। अब क्योंकि ये सब सच्ची घटनाऐं हैं इसलिये इनको इतिहास भी कह सकते हैं।

हमें पूरा विश्वास है कि ऐतिहासिक कहानियों की यह पुस्तक तुम सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में नयी जानकारी के साथ साथ तुम सबके ज्ञान की सीमा को भी बढ़ायेगी। यह तुम्हें उन लोगों की ज़िन्दगी के बारे में बतायेंगी कि वे आज इस तरह के कैसे वने।

इन्हें पढ़ो और अपना ज्ञान बढ़ाने के साथ साथ इनसे अपना मनोरंजन भी करो।

---

[1] "Itihas-1-Lone Country of Thirteen Months" was about a country of Africa.

[2] "Itihas-2-Our Great People" was about the personal less-known incidents of some kings and great people. There are over 20 such people.

1 विश्वामित्र जी

बच्चों यह तो तुम जानते ही होगे कि हमारे हिन्दू धर्म में चार वर्ण होते हैं – ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र। और सामान्यतया जो जिस परिवार में जन्म लेता है वह उसी वर्ण का होता है। उदाहरण के लिये अगर किसी ने वैश्य परिवार में जन्म लिया है तो वह वैश्य वर्ण का ही कहलायेगा।

हिन्दू धर्म के इतिहास में इस नियम के दो अपवाद मिलते हैं एक तो विश्वामित्र जी का दूसरा परशुराम जी का। ऐसा क्यों और कैसे हुआ यह तो एक दूसरी लम्बी कहानी है पर यहॉ हम तुम्हें विश्वामित्र जी की ज़िन्दगी की एक महत्वपूर्ण घटना बताने जा रहे हैं।

तुमने विश्वामित्र जी का नाम तो सुना ही होगा। शायद उनके बारे में कुछ पढ़ा भी हो।

अगर तुमने तुलसी दास जी की रामायण सुनी या पढ़ी है तो उसमें तुमने विश्वामित्र जी का नाम जरूर ही सुना या पढ़ा होगा। ये ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी के नाम से मशहूर हैं। तुलसी की रामायण में ये दशरथ जी से उनके दोनों बेटे राम और लक्ष्मण को अपने यज्ञ की रक्षा करने के लिये मॉगने के लिये आते हैं।

आज हम उन्हीं विश्वामित्र जी के बारे में बात करने जा रहे हैं। ये अपनी कितनी ही बातों के लिये मशहूर हैं।

विश्वामित्र जी का असली नाम विश्वरथ था। बाद में ये विश्वामित्र बने। विश्वामित्र जी का जन्म भी रहस्यभरी परिस्थितियों में हुआ था।

उनका जन्म कैसे हुआ था यह एक लम्बी और मजेदार कहानी है और क्योंकि हमारा यह लेख उनके जन्म से सम्बन्धित घटनाओं को देना नहीं है इसलिये यहाँ हम उस कहानी को नहीं दे रहे हैं।

हालाँकि विश्वामित्र जी ब्रह्मर्षि विश्वामित्र कहलाते हैं पर तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि वह एक क्षत्रिय राजा के क्षत्रिय बेटे थे। एक राजा के बेटे यानी एक राजकुमार यानी एक क्षत्रिय थे। तो फिर वह क्षत्रिय से एक ऋषि या ब्रह्मर्षि कैसे बन गये? एक ब्राह्मण कैसे बन गये? इसी की कहानी हम तुम्हें यहाँ बताने जा रहे हैं।

केवल एक घटना ने इनको राजकुमार से ब्रह्मर्षि बना दिया और ये अपना राजपाट छोड़ कर चले गये। पर वह कौन सी ऐसी एक घटना थी जिससे इनकी ज़िन्दगी में यह बदलाव आया। तो लो पढ़ो वह घटना यहाँ।

एक बार राजा होने के नाते ये अपनी सेना की एक टुकड़ी ले कर अपने राज्य का दौरा करने निकले। घूमते घूमते ये एक जंगल में आ निकले। वहाँ इन्होंने देखा कि जंगली जानवर आपस में बिना किसी शत्रुता के इधर उधर घूम रहे हैं। यह देख कर इनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

पूछने पर पता चला कि पास में ही ब्रह्मर्षि वशिष्ठ जी का आश्रम था। इन्होंने सोचा कि जब यहाँ आ गये हैं तो उनसे भी मिल लिया जाये सो ये अपनी सेना सहित उनसे मिलने के लिये उनके आश्रम जा पहुँचे।

वशिष्ठ जी का आश्रम एक बहुत बड़ा आश्रम था। जब विश्वामित्र जी उनके आश्रम में पहुँचे तो उन्होंने उनका आदर से स्वागत किया और रात को अपने आश्रम में रुकने की प्रार्थना की।

विश्वामित्र जी ने सोचा कि यह तो खुद ही एक गुरू ब्राह्मण हैं ये एक राजा और उसकी सेना को कैसे ठहरा सकेंगे सो उन्होंने उनको रात को ठहरने से नम्रतापूर्वक मना कर दिया। पर वशिष्ठ जी ने जब काफी जिद की तो वह मान गये।

अपने आश्रम की जरूरतों को पूरा करने के लिये वशिष्ठ जी के पास एक गाय थी – नन्दिनी गाय[3]। वही उनको उनके आश्रम के लिये सब कुछ देती थी – खाना पीना दूध दही घी यज्ञ का सामान आदि आदि।

अब वशिष्ठ जी के पास तो नन्दिनी गाय थी सो उसकी सहायता से उन्होंने राजा और राजा की सेना दोनों का शाही ढंग से स्वागत किया।

[3] Nandinee cow was the daughter of Kaamdhenu and was a wish fulfilling cow. Kaamdhenu cow appeared from Saagar Manthan.

उन्होंने नन्दिनी से कहा — "देखो हमारे राजा आज हमारे मेहमान हैं उनका शाही ढंग से स्वागत करने के लिये सब सामान तैयार करो।" सो उसने उनके लिये कुछ ही मिनटों में सारा सामान तैयार कर दिया।

विश्वामित्र जी तो यह देख कर आश्चर्य में डूब गये क्योंकि जो सुविधायें वशिष्ठ जी ने उनको दी थीं वे सुविधायें तो उनके अपने लिये अपने राजमहल में भी नहीं थीं।

यह सब देख कर उनको लगा कि वह गाय तो राजा होने के नाते उनके पास होनी चाहिये। उन्होंने वशिष्ठ जी से बड़ी नम्रता से उस गाय को उनको देने के लिये पार्थना की।

वशिष्ठ जी बोले — "राजन यह गाय तो मुझे मेरे आश्रम की रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिये कामधेनु की भेंट है। मेरे पास तो बस यही कुछ है अगर मैं उसे आपको दे दूँगा तो मैं अपने आश्रम का काम कैसे चलाऊँगा।"

विश्वामित्र जी बोले — "पर मैं इस देश का राजा हूँ यह गाय तो मेरे पास होनी चाहिये। आप इसका क्या करेंगे?"

वशिष्ठ जी बोले — "मुझे बहुत दुख है कि मैं यह गाय आपको नहीं दे सकता।"

विश्वामित्र जी ने उनको धमकी दी — "मैं तो केवल आपसे प्रार्थना कर रहा हूँ पर अगर आप इसे मुझे नहीं देंगे तो आपको मालूम है कि मुझे इसे आपसे लेने से कोई नहीं रोक सकता।"

कह कर विश्वामित्र जी ने अपनी सेना को हुक्म दिया कि वे वशिष्ठ जी के आश्रम से उनकी गाय उठा लें। राजा का हुक्म मान कर उन्होंने गाय के गले में एक रस्सी बॉधी और उसको ले चले।

वशिष्ठ जी बेचारे मजबूरी की हालत में अपना सिर हिलाते बैठे रह गये। नन्दिनी ने तब उनसे अपनी रक्षा अपने आप करने की आज्ञा मॉगी जो वशिष्ठ जी ने उसको तुरन्त ही दे दी।

बस वह केवल एक बार ज़ोर से रॅभायी और उसके रोम रोम से हजारों सैनिक निकल पड़े। विश्वामित्र जी की सेना इतने सारे दैवीय सैनिकों का सामना नहीं कर सकी और वे सब वहॉ से चले गये।

पर विश्वामित्र जी अपने इस अपमान को नहीं सह सके सो उन्होंने अपने **100** बेटों को उस गाय को लाने के लिये भेजा तो वे सब वशिष्ठ जी की एक ही हुंकार की आग से जल कर मर गये। इससे तो विश्वामित्र जी को और बहुत गुस्सा आ गया।

विश्वामित्र जी ने वशिष्ठ जी से पूछा कि उनके पास यह कौन सी शक्ति थी जो उनकी अपनी राजा की शक्ति से भी इतनी अधिक थी। वशिष्ठ जी ने बताया कि यह उनकी तप की शक्ति थी। तब उनको लगा कि उनकी राजा की शक्ति तो वशिष्ठ जी की तप की शक्ति के सामने कुछ भी नहीं थी।

बस इसी घटना ने उनकी ज़िन्दगी बदल दी। तप की शक्ति प्राप्त करने के लिये उन्होंने अपना राज्य छोड़ा और तप करने के लिये हिमालय चले गये।

इस तप का समय उनका कई घटनाओं से भरा हुआ है। हालॉकि हम इस कहानी को यहीं खत्म कर सकते हैं पर उनके जीवन की उन घटनाओं को यहॉ वर्णन किये बिना उनके जीवन बदलने का कारण पूरा नहीं होगा सो हम उन घटनाओं को तुम लोगों को बहुत ही थोड़े में बताते हैं।

हिमालय जा कर उन्होंने शिव जी को प्रसन्न किया तो उन्होंने उनसे धनुष बाण की विद्या के और राक्षसों गन्धर्वों महर्षियों यक्षों के सबके रहस्यभरे बाणों का भेद जानने का वर मॉगा तो वे उनको यह वर दे कर चले गये।

यह वर पा कर वह फिर से वशिष्ठ जी से बदला लेने के लिये उनके आश्रम पहुॅच गये। वशिष्ठ जी उस समय अपनी पूजा कर रहे थे। विश्वामित्र जी ने अपने वरदान में पाये गये बहुत से बाण वशिष्ठ जी पर छोड़े। बहुत सारे ऋषि जो वहॉ पूजा कर रहे थे बाणों की यह वर्षा देख कर डर के मारे भाग गये।

वशिष्ठ जी ने अपनी ऑखें खोलीं तो अपने सामने विश्वामित्र जी को एक भयानक हथियार लिये पाया। उन्होंने अपने सारे भागे हुए ऋषियों को वापस बुलाया।

उन्होंने अपना दंड जिस पर उनका हाथ रखा हुआ था उखाड़ा और विश्वामित्र जी के सामने गाड़ दिया जिसके सामने उनके सारे बाण और हथियार बेकार हो गये। इससे विश्वामित्र जी को बहुत

शर्म आयी क्योंकि उनकी तो सारी तपस्या ही बेकार हो गयी थी। शिव जी का दिया हुआ कोई हथियार काम नहीं कर रहा था।

वह बोले "धिग बलम्, धिग क्षत्रिय, ब्रह्म तेजो बलम् बलम्" यानी शारीरिक बल को धिक्कार है, क्षत्रिय बल को भी धिक्कार है केवल ब्रह्म तेज का बल ही बल है।

तो इस बार विश्वामित्र जी ने फिर से तपस्या की और ब्रह्मर्षि बनने का विचार किया। इसके लिये वे अपनी रानियों के साथ दक्षिण की तरफ चले गये और **1000** साल तक तप कर के ब्रह्मा जी को प्रसन्न किया।

ब्रह्मा जी ने प्रसन्न हो कर उनको दर्शन दिये और राजर्षि[4] होने का वरदान दिया पर विश्वामित्र जी का उद्देश्य तो राजर्षि बनना नहीं था। वह राजर्षि बनने से सन्तुष्ट नहीं थे वह तो ब्रह्मर्षि बनना चाहते थे सो उन्होंने अपना तप जारी रखा।

इस बीच एक राजा सत्यव्रत[5] सशरीर स्वर्ग जाना चाहते थे सो उन्होंने वशिष्ठ जी से प्रार्थना की कि वह उनको सशरीर स्वर्ग भेज दें पर वशिष्ठ जी ने उनको यह कह कर मना कर दिया कि यह संसार के नियमों के विरुद्ध है मैं यह काम नहीं कर सकता। तो वशिष्ठ जी

[4] Raajarshi is a king who lives like a Rishi (sage). Seetaa Jee's father Raajaa Janak was the Raajarshi. So since Vishwaamitra Jee was a King, Brahmaa Jee bestowed the boon of being Raajarshi to him but he was not satisfied with it.

[5] You might have known Truthful Raja Harishchandra. Raja Satyavrat was his father.

को नीचा दिखाने के लिये विश्वामित्र जी ने राजा सत्यव्रत को सशरीर स्वर्ग पहुँचाने की कोशिश की।

वह अपने इस काम में करीब करीब सफल भी हो गये थे पर क्योंकि इन्द्र यह नहीं चाहते थे कि कोई आदमी सशरीर स्वर्ग में आये सो उन्होंने सत्यव्रत को स्वर्ग से नीचे धकेल दिया।

अब क्योंकि इन्द्र उनको स्वर्ग में आने नहीं दे रहे थे और विश्वामित्र जी के तप की शक्ति उनको धरती पर नहीं आने दे रही थी सो वह बीच में ही अटक गये और एक नक्षत्र बन गये।

विश्वामित्र जी ने अपनी शक्ति से उनको वहाँ हमेशा के लिये स्थित कर दिया और वह त्रिशंकु के नाम से मशहूर हो गये। विश्वामित्र जी अपनी इन्द्र पर, देवताओं पर और वशिष्ठ जी पर की इस जीत से बहुत प्रसन्न थे।

इसके बाद विश्वामित्र जी तपस्या करने के लिये पुष्कर जी[6] चले गये। वहाँ इनको अपना भानजा यानी बहिन का बेटा देवरात[7] मिल गया।

अयोध्या के राजा अम्बरीष ने पुत्र पाने के लिये एक यज्ञ किया जिसमें उन्होंने माँगा कि अगर उनके एक बेटा होगा तो वह उसकी

[6] Pushkar Jee is a place in Rajasthaan. It is said that after travelling to Chaar Dhaam one must go to Pushkar Jee otherwise that travel is not complete.

[7] Devaraat was the son of his sister Satyavatee who was married to Richeek Muni. They had three sons – the eldest one was Maharshi Jamadagni and Devaraat was the middle son.

बलि दे देंगे तो यज्ञ के बाद उनके बेटा तो हुआ पर बेटे के मोह में वह उसकी बलि नहीं दे सके।

इसके लिये उन्होंने किसी और लड़के को ढूँढा तो उनको विश्वामित्र जी की बहिन का बीच का बेटा देवरात मिल गया जिसको वह अपने बेटे की जगह बलि दे सकते थे। सो वह वह रस्म करने के लिये उसको पुष्कर ले गये।

देवरात ने जब अपने मामा विश्वामित्र को देखा तो उनसे अपनी जान बचाने की प्रार्थना की। विश्वामित्र जी ने दया कर के उसको एक मन्त्र बताया और कहा "जब राजा तुम्हें बलि की जगह बाँध दें तो अपनी पूरी भक्ति से यह मन्त्र पढ़ना तुम बच जाओगे।"

उसने ऐसा ही किया। उस मन्त्र का पाठ सुन कर इन्द्र बहुत खुश हुए और उसको छोड़ दिया। साथ में उन्होंने अम्बरीष के बेटे को भी छोड़ दिया। बाद में विश्वामित्र जी ने देवरात को अपने बेटे की तरह से गोद ले लिया। तबसे उसका नाम शुनहशेप पड़ गया।

इस तरह विश्वामित्र जी ने अपना तप जारी रखा और **1000** साल और तपस्या की। पर इस बार उनकी तपस्या से इन्द्र घबरा गया सो उसने उनका तप भंग करने के लिये अपनी सबसे सुन्दर अप्सरा मेनका को भेजा।

मेनका उनके साथ **10** साल रही। वह उनका तप भंग करने में सफल हो गयी। समय आने पर उसने विश्वामित्र की बेटी को जन्म दिया जिसको आज हम शकुन्तला के नाम से जानते हैं। जिसका

विवाह राजा दुष्यन्त से हुआ था और उनके पुत्र भरत के नाम पर हमारा देश भारत कहलाया।

यह सब देख कर विश्वामित्र जी ने सोचा "मैंने अपना तप क्यों छोड़ा?" और वह फिर तप करने चले गये। इस बार उन्होंने अपना गुस्सा छोड़ कर तप किया।

तप पूरा होने के बाद उन्होंने अपने लिये खाना तैयार किया और उसे खाने बैठे कि ब्राह्मण के वेश में इन्द्र उनके पास आये और उनसे खाना माँगा। उन्होंने ब्राह्मण को खाना दिया और फिर से **1000** साल के लिये तपस्या में बैठ गये।

इस बार इन्द्र ने फिर से उनकी तपस्या भंग करने की कोशिश की पर अबकी बार वह अपने इरादों से नहीं डिगे। तपस्या पूरी होने पर ब्रह्मा जी फिर से उनके सामने प्रगट हुए और उनको ब्रह्मर्षि होने का वरदान दिया।

इसमें विश्वामित्र जी के ब्रह्मर्षि बनने की इच्छा की घटना तो केवल एक ही है कि जब उन्होंने देखा कि ब्रह्म तेज का बल एक क्षत्रिय के बल से कहीं ज़्यादा है तो वह राजा से ब्रह्मर्षि बनने की कोशिश में लग गये।

पर उसको पूरा करने के लिये यानी ब्रह्मर्षि बनने में उनको कितना समय लगा कितने बड़े बड़े इम्तिहान देने पड़े यह एक लम्बी कहानी है जो यहाँ थोड़े में ही दी हुई है।

इस तरह वशिष्ठ जी से बल में हारने की केवल एक घटना ने उनका पूरा जीवन बदल दिया। घोर तपस्या कर के वह एक राजा से एक ब्रह्मर्षि बन गये। उनके जीवन की यह एक अकेली घटना यह बताती है कि मनुष्य अगर परिश्रम करे तो क्या प्राप्त नहीं कर सकता।

2 वाल्मीकि जी

जहॉ तुमने विश्वामित्र जी की एक क्षत्रिय से ब्रह्मर्षि बनने की कहानी पढ़ी वैसे ही यह कहानी भी एक डाकू से एक बहुत बड़े भक्त कवि और महर्षि बनने की है।

यह महर्षि वाल्मीकि जी की कहानी है जिन्होंने संस्कृत में सबसे पहला काव्य लिखा जिसकी वजह से आज वह आदि कवि कहलाते हैं और उनका लिखा हुआ वह काव्य आदि महाकाव्य कहलाता है। और वह आदि महाकाव्य है रामायण।

उन्होंने ही गायत्री मन्त्र भी लिखा जो आज मन्त्रों में महामन्त्र माना जाता है।

वाल्मीकि जी का नाम पहले से ही वाल्मीकि नहीं था। उनका नाम था रत्नाकर। आओ देखते हैं कि उनका नाम वाल्मीकि कैसे पड़ा और उनके जीवन की वह कौन सी घटना थी जिसने उनकी डाकू की ज़िन्दगी बदल दी।

एक बार की बात है कि एक जंगल में एक ब्राह्मण पति पत्नी रहते थे। उनके एक बेटा था जिसका नाम था रत्नाकर। एक बार जब पिता और बेटा पूजा के लिये फूल और हवन के लिये समिधा[8] चुनने के लिये जंगल गये हुए थे तो दोनों बिछड़ गये।

[8] Samidhaa are the short twigs which are use to burn in Havan (Yagya).

पिता ने बेटे को बहुत ढूँढा पर वह उसको नहीं मिला तो वह निराश हो कर घर लौट आया। उसने सोचा कि शायद किसी जंगली जानवर ने उसको खा लिया होगा या मार दिया होगा।

पर किस्मत से भील जाति के एक शिकारी को वह बच्चा मिल गया सो वह उसको अपने घर ले आया और उसको अपने बेटे की तरह पालने लगा। इस तरह से ब्राह्मण का वह बच्चा एक शिकारी के रूप में बड़ा होने लगा।

जब वह शादी के लायक हो गया तो उसके भील पिता ने उसकी शादी अपने समुदाय की एक अच्छी लड़की से कर दी। फिर उसके बच्चे हो गये। इस तरह उसका परिवार हो गया।

बड़ा परिवार होने की वजह से अब वह केवल शिकार से अपने घर का गुजारा नहीं कर पाता था सो उसने जंगल में डाका डालना शुरू कर दिया। जो लोग जंगल में से हो कर आते जाते थे वह उनको पकड़ लेता लूट लेता और उस पैसे से अपना और अपने परिवार का पेट पालता।

दिन ऐसे ही गुजर रहे थे कि एक दिन नारद जी अपनी वीणा[9] बजाते हुए उधर से गुजरे। उसने नारद जी को भी पकड़ लिया और उनसे पैसे माँगे।

[9] Veena is an Indian string musical instrument. See its picture above.

नारद जी बोले — "अरे भाई मैं तो विष्णु का भक्त हूँ। मेरे पास इस वीणा के अलावा और कुछ नहीं है। अगर तुम्हें मेरी वीणा पसन्द हो तो इसे तुम ले लो।"

रत्नाकर बोला — "मैं इस वीणा का क्या करूँगा ओ नकली भक्त। मुझे तो पैसे चाहिये। कहाँ छिपा रखे हैं तूने पैसे। ला निकाल उन्हें और मुझे दे।"

नारद जी बोले — "मैं तुमसे सच कह रहा हूँ। मेरे पास इस वीणा के अलावा और कुछ नहीं है। पर तुम यह काम क्यों करते हो?"

रत्नाकर बोला — "लोग पैसा क्यों कमाते हैं अपना और अपने परिवार का पेट पालने के लिये। मैं भी यह काम इसी लिये करता हूँ।"

नारद जी बोले — "क्या तुम्हें पता है कि इस तरह से दूसरों को लूटना पाप है। तुम अपना और अपने परिवार का पेट पालने के लिये लोगों को लूटने की बजाय कोई और काम क्यों नहीं करते।"

रत्नाकर बोला — "मैं जानता हूँ कि यह पाप है पर मैं क्या करूँ मैं और कोई काम जानता ही नहीं।"

नारद जी बोले — "ठीक है। जिसके लिये भी तुम यह काम कर रहे हो पहले तुम उनसे जा कर यह पूछ कर आओ कि जैसे वह तुम्हारा पैसा बाँटते हैं वैसे ही क्या वह तुम्हारे पाप भी बाँटेंगे?"

रत्नाकर बड़े विश्वास के साथ बोला — "क्यों नहीं जब वे मेरा पैसा बॉट रहे हैं तो वे मेरे पाप भी बॉटेंगे। क्योंकि यह सब मैं उन्हीं के लिये तो कर रहा हूॅ। वे मेरे अपने आदमी हैं।"

नारद जी ने उससे फिर से ज़ोर दे कर कहा — "जा कर पूछ कर तो आओ। क्योंकि मुझे लगता है कि वे तुम्हारे पाप नहीं बॉटेंगे। जाओ जा कर पूछ कर आओ और फिर मुझे आ कर बताओ।"

रत्नाकर बोला — "मैं तुझ जैसे लोगों को अच्छी तरह जानता हूॅ। तू मुझे यहॉ से भेज कर मेरे जाने के बाद भाग जाना चाहता है। मैं यह नहीं होने दूॅगा।"

नारद जी हॅसे — "नहीं नहीं मैं नहीं भागूॅगा। अगर तुमको मेरे ऊपर भरोसा न हो तो तुम मुझे यहीं इस पेड़ से बॉध जाओ। जब तुम लौटोगे तो तुम मुझे यहीं पाओगे।"

रात्नाकर इस बात पर राजी हो गया। उसने नारद जी को पास के एक पेड़ से बॉधा और अपने घर गया। वहॉ जा कर उसने अपने पत्नी और बच्चों से पूछा कि क्या वे उसके साथ उसके इस पाप में भागी हैं।

पत्नी और बच्चों ने उससे कहा कि वे उसके इस पाप में भागी बिल्कुल भी नहीं हैं क्योंकि यह उसका कर्तव्य था कि वह उन सबका भरण पोषण करे। उन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं कि वह यह पैसा कहॉ से लाता है।

रत्नाकर ने उनको बहुत समझाने की कोशिश भी की कि वह यह सब केवल उनके लिये ही तो करता है पर उन्होंने जवाब दिया कि यह तुम्हारा फर्ज है कि तुम हमारा पेट पालो। अब तुम हम लोगों को कैसे पालते हो तुम हमको पालने के लिये पैसा कैसे कमाते हो यह तुम जानो। हम तुम्हारे पुन्य तो बॉट सकते हैं पर पाप नहीं।

यह सुन कर तो रत्नाकर की सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। उसके मुँह से तो कोई बोल ही नहीं निकला। वह सोचने लगा कि वे सब लोग कितने कृतघ्न थे। जिनके लिये वह सारी ज़िन्दगी दूसरों को लूटता रहा आज वही उसको दगा दे गये। वह वहॉ से चुपचाप नीचा सिर किये वापस चला आया।

आ कर उसने देखा कि नारद जी तो वहीं बॅधे थे पर वह सो गये थे। रत्नाकर उन ऋषि की इस बात से बहुत प्रभावित हुआ कि उन्होंने तो भागने की भी कोशिश नहीं की थी।

उसने उनको जगाया और कहा — "ओ भक्त तू ठीक कहता था। मेरे घर वाले जिनके लिये मैं यह सब करता था वही मेरे इस पाप के भागी नहीं बनना चाहते। पर अब मैं क्या करूँ। मैंने तो अपनी जिन्दगी में कितने सारे पाप किये हैं मेरे ये सारे पाप कैसे धुलेंगे।"

और ऐसा कह कर वह नारद जी के पैरों में गिर पड़ा और बोला — "मेहरबानी कर के अब आप ही मुझे कोई तरीका बताइये ऋषिवर जिससे मैं अपने इन पापों से छुटकारा पा सकूँ।"

नारद जी प्यार से बोले — "मैं तुम्हें एक मन्त्र देता हूँ। तुम इस मन्त्र का जाप करो। इस मन्त्र के जाप से तुम्हारे सारे पाप धुल जायेंगे। बोलो "राम राम"।"

रत्नाकर बोला — "मैं तो इतना बड़ा पापी हूँ कि मुझसे तो यह शब्द ही नहीं बोला जा रहा। मुझे और कोई तरकीब बताइये ऋषिवर। मेहरबानी कर के मुझे बचाइये।"

इस पर नारद जी ने एक पल सोचा और फिर बोले — "अच्छा तो बोलो "मरा मरा"।"

रात्नाकर बोला — "हॉ यह शब्द ठीक है मेरे लिये।"

नारद जी फिर बोले — "ठीक है। अब जब तक मैं वापस आता हूँ तुम इस मन्त्र का जाप करो। मैं फिर आ कर तुमसे मिलता हूँ।"

इतना कह कर नारद जी तो चले गये और रत्नाकर एक पेड़ के नीचे बैठ कर इस मन्त्र का जाप करने लगा।

नारद जी वहॉ से जाने के बाद वहॉ बहुत दिनों तक वापस नहीं आये। उधर रत्नाकर उस मन्त्र के जाप में इतना मग्न हुआ कि वह भी वहॉ से उठा ही नहीं। दीमक[10] ने उसके शरीर पर अपना घर बना लिया।

बहुत समय बाद नारद जी वहॉ आये तो रत्नाकर उनको वहॉ कहीं दिखायी नहीं दिया। पर वहॉ दीमक का एक घर खड़ा था

[10] White ants or termites

और रत्नाकर का शरीर सोने की तरह उस घर में से चमक रहा था सो नारद जी ने उस घर को तोड़ दिया और रत्नाकर को बाहर निकाला।

दीमक के इस घर को संस्कृत में वल्मीकि कहते हैं तो नारद जी ने रत्नाकर को वाल्मीकि का नाम दे दिया। ये ही वाल्मीकि जी आगे चल कर संस्कृत के पहले कवि हुए जिन्होंने वाल्मीकि रामायण लिखी।

इन्होंने ही जब राम ने सीता को बनवास दे दिया था तो सीता को अपने आश्रम में ठहराया। इन्हीं के आश्रम में राम के दोनों बेटे लव और कुश पैदा हुए। इन्होंने अपनी लिखी हुई रामायण उन दोनों बच्चों को सिखायी और फिर उन्होंने उसको अपने पिता को सुनायी।

इस तरह से एक छोटी सी घटना ने रत्नाकर डाकू को राम का भक्त और आदि कवि वाल्मीकि बना दिया।

3 महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध का नाम तो तुम सबने सुना ही होगा। इन्हीं के नाम पर बौद्ध धर्म चलता है। इनका जन्म ईसा से **500** साल पहले हुआ था। ये **80** साल तक ज़िन्दा रहे।

ये भी महात्मा बुद्ध ऐसे ही नहीं बन गये थे। इनके जीवन में घटी केवल एक दिन की घटना ने इनको महात्मा बुद्ध बना दिया।

ये राजा शुद्धोदन के बेटे थे। राजा शुद्धोदन की राजधानी कपिलवस्तु थी जो उस समय उत्तरी बिहार में थी।

कहते हैं कि इनके जन्म के पहले इनकी मॉ को कई ऐसे सपने आये थे जिनसे उनको पता चल गया था कि उनको कोई दैवी सन्तान पैदा होने वाली है।

जब ये पैदा हुए तो इनके पिता राजा शुद्धोदन ने इनको सिद्धार्थ नाम दिया। इनका जन्म क्योंकि क्षत्रिय जाति की शाक्य शाखा में हुआ था इसलिये इनको शाक्य मुनि भी कहा जाता है पर गौतम बुद्ध ये ज्ञान मिल जाने के बाद ही कहलाये।

जन्म के बाद इनके पिता ने इनका भविष्य जानने के लिये कुछ ज्योतिषियों को बुलाया था। कहते हैं कि इनके जन्म दिन पर आठ ज्योतिषी आये थे। उनसे जब इनके भविष्य के बारे में पूछा गया तो सात ज्योतिषियों ने तो कहा कि या तो यह बच्चा चक्रवर्ती राजा बनेगा या फिर चक्रवर्ती सन्त।

इन आठ ज्योतिषियों में से एक ज्योतिषी कोदन्ना[11] भी थे। उन्होंने कहा "नहीं राजन आप इसमें से राजा शब्द निकाल दें। यह बच्चा केवल चक्रवर्ती सन्त ही बनेगा चक्रवर्ती राजा नहीं।"

जब राजा ने कोदन्ना की भविष्यवाणी सुनी तो वह तो बहुत उदास और दुखी हो गये और गहरे विचारों डूब गये कि उनका अकेला बेटा राज्य छोड़ कर चला जायेगा।

बहुत सोच विचार कर उन्होंने बच्चे को संसार के सारे दुखों से दूर रखने की सोची ताकि उसका मन संसार से ही न हट जाये और वह उनका राजपाट छोड़ कर संत बन जाये। उसके लिये उन्होंने महल में ही सब सुख सुविधाओं और आराम के साधन जुटा दिये।

पहली बात तो उस बच्चे को महल के बाहर जाने ही नहीं दिया जाता था और अगर जाने भी दिया जाता तो इस बात का खास ध्यान रखा जाता कि बाहर उसको कोई दर्द भरी घटना न दिखायी दे जिससे उसका मन संसार से हट जाये।

इस तरह से काफी समय गुजर गया। जब सिद्धार्थ **24** साल के हो गये तो उनकी शादी यशोधरा के साथ कर दी गयी। इस तरह कई साल तक सिद्धार्थ ने बहुत ही आरामदेह ज़िन्दगी गुजारी। फिर उनको एक बेटा हुआ जिसका नाम रखा गया राहुल।

[11] Kodanna – one of the eight astrologers who came on the occasion of Gautam Buddha's birthday to predict his future.

पर जो कुछ भाग्य में लिखा है उसे कौन टाल सकता है। एक दिन ऐसा आया...

एक बार सिद्धार्थ की इच्छा कहीं दूर घूमने की हुई तो उन्होंने अपने नौकरों से कहा कि वे उनको कहीं दूर घुमाने के लिये ले चलें। तो रास्ते में उन्होंने उस दिन जो कुछ देखा उसने तो उनकी ज़िन्दगी ही बदल दी।

सबसे पहले उन्होंने एक कोढ़ी आदमी देखा। उसके सारे शरीर पर घाव से हो रहे थे। उन्होंने अपने नौकरों से पूछा कि इस आदमी को क्या हुआ है। यह ऐसा क्यों दिखायी देता है। उन्होंने उनको बताया कि यह आदमी बीमार है।

सिद्धार्थ ने पूछा — "यह बीमारी क्या होती है?"

नौकरों ने कहा — "राजकुमार, यह तो शरीर है। बीमारियॉ तो इसे लगती ही रहती हैं। इसमें शरीर का कभी कोई अंग खराब होता है तो कभी कोई।"

राजकुमार सिद्धार्थ यह सुन कर चिन्ता में पड़ गये।

आगे चले तो उन्होंने एक बूढ़ा देखा जिसके शरीर पर झुर्रियॉ पड़ी हुई थीं, उसकी कमर झुकी हुई थी और वह लाठी के सहारे भी बड़ी मुश्किल से चल पा रहा था।

सिद्धार्थ ने अपने नौकरों से पूछा — "इस आदमी को क्या हुआ?"

नौकरों ने कहा — "राजकुमार, यह बुढ़ापा है। भगवान जिसको लम्बी उमर देता है तो वह बूढ़ा तो होता ही है।"

राजकुमार सिद्धार्थ यह सुन कर फिर चिन्ता में पड़ गये।

और आगे चले तो उन्होंने एक मरा हुआ आदमी देखा जिसकी अरथी को चार लोग अपने कन्धों पर शमशान लिये जा रहे थे। उसके पीछे पीछे लोग रोते हुए चले जा रहे थे।

सिद्धार्थ ने उसको देख कर पूछा — "ये चार आदमी किसको उठा कर लिये जा रहे हैं? और इसके पीछे पीछे जाने वाले लोग रो क्यों रहे हैं?"

नौकरों ने बताया कि यह आदमी मर गया है और ये लोग इस को शमशान लिये जा रहे हैं इसका अन्तिम संस्कार करने के लिये।

राजकुमार सिद्धार्थ ने फिर पूछा — "यह मरना क्या होता है और यह अन्तिम संस्कार क्या होता है? यह आदमी क्यों मर गया?"

नौकर बोले — "राजकुमार मौत तो हर आदमी को आती है। जो इस दुनियॉ में आया है वह एक दिन जायेगा भी जरूर। अब क्योंकि यह चला गया तो इसके शरीर को रखा नहीं जा सकता इसे जला दिया जायेगा और ये लोग इसको फिर कभी नहीं देख पायेंगे इसलिये ये लोग इसके पीछे पीछे रोते जा रहे हैं।"

उन्होंने राजकुमार सिद्धार्थ को गरीबी और दुख के बारे में और भी बहुत कुछ बताया। राजकुमार सिद्धार्थ का मन यह सब देख सुन

कर बहुत खिन्न हो गया। उन्होंने नौकरों से तुरन्त ही घर वापस चलने के लिये कहा।

घर आ कर वह बहुत परेशान हो गये। कई सवाल उनके दिमाग में घूमने लगे — "इस धरती पर जीने का क्या मतलब है?" "यह ज़िन्दगी केवल यहाँ आनन्द मनाने के लिये ही नहीं है इसका कुछ और भी मतलब है। वह मतलब क्या है।" आदि आदि।

सोचते सोचते वह इतना परेशान हुए कि एक दिन वह अपने नन्हें से बच्चे राहुल और पत्नी यशोधरा को रात में अकेला सोते हुए छोड़ कर घोड़े पर सवार हो कर महल से चले गये। और फिर कभी वापस नहीं आये।

यही उनकी ज़िन्दगी की वह घटना थी जिसने उनको राजकुमार सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध बना दिया।

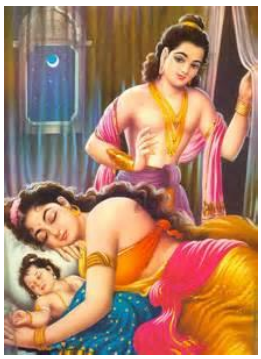

4 सम्राट चन्द्रगुप्त

सम्राट चन्द्रगुप्त भारत का पहला हिन्दू राजा था और यह करीब करीब ईसा से **350** साल पहले हुआ था।

यह एक राजा का बेटा था पर इसके पिता को एक और राज ने हरा दिया था और मार दिया था इसलिये इसकी मॉ इसको ले कर अपना देश छोड़ कर भाग गयी थी।

कैसे इसके जीवन की केवल एक घटना ने इसको भारत का सम्राट बना दिया था और यह आज भी एक बहुत मशहूर राजा के नाम से जाना जाता है यहॉ वही कहानी दी जाती है।

यह एक घटना इसके जीवन की ऐसी कोई बहुत लम्बी घटना नहीं है जिसका वर्णन बहुत सारी जगह ले ले पर हॉ है तो यह घटना ही न जिसने उसकी ज़िन्दगी बदल दी। बस किसी की नजर की बात है। अगर यह घटना न होती तो वह बच्चा आज का चन्द्रगुप्त न होता।

यह उन दिनों की बात है जब पाटलिपुत्र यानी आज की पटना में नन्द वंश के आखिरी राजा धनानन्द राजा थे – ईसा से करीब **350** साल पहले। पाटलिपुत्र में एक ब्राह्मण चनक भी रहा करते थे जिनके एक बेटा था जिसका नाम था विष्णुगुप्त। चनक का बेटा होने की वजह से इसका नाम चाणक्य पड़ गया था।

एक बार राजा धनानन्द ने बहुत सारे ब्राह्मणों को खाना खिलाया तो उसमें चाणक्य भी गये। देखने में चाणक्य काले और बदसूरत थे सो उनकी शक्ल देख कर राजा नन्द बहुत नाराज हुए और उन्होंने उनको उनकी चोटी पकड़ कर धक्के मार कर बाहर निकलवा दिया।

अब यह चोटी कोई ऐसी वैसी तो थी नहीं एक ब्राह्मण की चोटी थी। और किसी ऐसे वैसे ब्राह्मण की चोटी भी नहीं थी यह थी चाणक्य की चोटी।

इस चोटी पकड़ कर बाहर निकालने में चाणक्य की चोटी खुल गयी और चाणक्य ने प्रतिज्ञा की कि वह अपनी चोटी तब तक नहीं बॉधेंगे जब तक राजा धनानन्द को राजगद्दी से हटा कर किसी अच्छे राजा को नहीं बिठा देंगे।

बस इसी प्रतिज्ञा और खुली चोटी के साथ चाणक्य एक अच्छे राजा के उम्मीदवार की तलाश में इधर उधर घूमने लगे।

एक बार जब वह इस तलाश में इधर उधर घूम रहे थे तो उन्होंने कुछ बच्चों को राजा और उसकी प्रजा का खेल खेलते देखा। कौतूहलवश वह वहॉ रुक गये और उन बच्चों का खेल देखने लगे।

उस समय बालक चन्द्रगुप्त राजा बना हुआ था और न्याय कर रहा था। चाणक्य को उसके न्याय करने का ढंग बहुत पसन्द आया और उसने उसमें भविष्य में बनने वाले राजा की एक झलक देखी।

वह उसकी मॉ के पास गये और उसको उससे **1000** सोने के सिक्के दे कर मॉग लिया। उन्होंने उसको पढ़ाया लिखाया। राजकुमारों जैसी शिक्षा दी और बड़ा कर के उसको पाटलिपुत्र की राजगद्दी पर बिठा दिया।

इस तरह चाणक्य के अपमान की एक घटना ने भारत का इतिहास बदल दिया और इस लड़के के खेल ने इस बच्चे की ज़िन्दगी पलट दी। सड़क पर राजा का खेल खेलने वाला यह बच्चा केवल राजा ही नहीं बल्कि पूरे भारत का सम्राट बन गया।

न राजा धनानन्द के दरबार में चाणक्य का अपमान हुआ होता, न वह कोई प्रतिज्ञा करता, न वह किसी राजा की खोज में निकलता, न उस समय चन्द्रगुप्त सड़क पर राजा और प्रजा का खेल खेल रहा होता।

न चाण्क्य ने उसको देखा होता, न उसको उसका न्याय पसन्द आया होता, न उसमें उसको एक होनहार भावी राजा की झलक दिखायी पड़ती और न वह उसको सड़क पर से उठा कर भारत का सम्राट बनाता।

इस तरह इन सब घटनाओं ने मिल कर चन्द्रगुप्त की ज़िन्दगी बदल दी और भारत का भविष्य।

5 महाकवि कालीदास

महाकवि कालीदास का नाम भी तुमने सुना ही होगा। ये भारत के एक बहुत बड़े कवि हो गये हैं। इन्होंने संस्कृत के कई उपन्यास और कविताऐं लिखी हैं।

इनका सबसे ज़्यादा मशहूर उपन्यास है शकुन्तला या फिर संस्कृत में "अभिज्ञान शाकुन्तलम"। इनके दूसरे काव्यों में हैं मेघदूत कुमारसम्भव और रघुवंश आदि।

बच्चों आज जैसा हम इन्हें जानते हैं यानी एक महाकवि के रूप में तो शुरू से ही ये इतने बड़े कवि नहीं थे। इनके इतने बड़े कवि बनने की भी एक कहानी है।

कहते हैं न कि किसी पुरुष के बड़े होने में किसी न किसी स्त्री का हाथ होता है। ऐसा ही मामला कुछ यहॉ भी था। तो आओ पढ़ते हैं कि वह स्त्री कौन थी जिसने इनको इतना बड़ा कवि बना दिया जो इतने पुराने होते हुए भी आज भी भारत के महाकवि कहे जाते हैं।

इनके बचपन के बारे में तो कुछ ज़्यादा नहीं मिलता सिवाय इसके कि जब ये छह महीने के थे तो इनके माता पिता का देहान्त हो गया था। एक चरवाहे ने इनको पाला पोसा इसलिये इनकी पढ़ाई लिखायी नहीं हो पायी।

एक बार की बात है कि भारत में काशी में एक राजा राज करते थे जिनका नाम था भीमशुक्ल। उनकी एक बहुत ही विद्वान बेटी थी जिसका नाम था विद्युतमा[12]। वह इतनी विद्वान थी कि उस राजा के राज्य में उसके बराबर का कोई भी विद्वान नहीं था।

उसने कह रखा था कि वह केवल उसी से विवाह करेगी जो उसको शास्त्रार्थ[13] में हरा देगा। पर राजा भीमशुक्ल चाहते थे कि उसका विवाह महान विद्वान वररुचि[14] से हो।

वररुचि भी उस समय के बहुत बड़े विद्वान थे। उस समय वह राजा विक्रमदित्य के दरबार में थे। पर विद्युतमा ने अपने पिता से उससे शादी करने से इसलिये मना कर दिया कि वह तो खुद ही उनसे कहीं ज़्यादा विद्वान थी।

अब यह तो वररुचि की सीधी सीधी बेइज़्ज़ती थी। सो वररुचि ने उसको एक ऐसी सीख देने की ठानी जिसको वह ज़िन्दगी भर याद रखे।[15]

बहुत सारे संत, विद्यार्थी, विद्वान, पंडित उससे शादी करने की इच्छा से उसके पास आये पर कोई उसको शास्त्रार्थ में नहीं हरा सका।

---

[12] Bheemshukla – name of the King of Kashi, UP, India. He had a very intelligent daughter VIdyotamaa.
[13] Means debate on spiritual matters
[14] Vararuchi was a lierary man in Vikramaaditya's court. The great poet Kalidas was also the great poet in the same court.
[15] Somewhere Vararuchi's name is mentioned as her suitor and revenger, but somewhere only as the planner of this event along with those suitors who got defeated from Vidyotamaa.

कुछ समय बाद उन हारे हुए लोगों ने उससे इस बात का बदला लेने की सोची। पर उससे बदला कैसे लिया जाये।

क्योंकि वह खुद बहुत विद्वान थी तो इन सबने सोचा कि हम उसकी शादी किसी बहुत बड़े बेवकूफ से करा देते हैं तो उसका अपने विद्वान होने का घमंड टूट जायेगा।

ढूँढते ढूँढते इनको एक ऐसा आदमी मिल गया जो एक पेड़ पर बैठा हुआ लकड़ी काट रहा था।

अब लकड़ी काटना तो कोई बेवकूफी की बात नहीं थी पर मजे की बात यह थी कि वह जिस डाल पर बैठा था उसी डाल को काट रहा था। यानी जैसे ही वह डाल कटती वह आदमी भी उस डाल के साथ साथ नीचे गिर जाता।

बस उनकी समझ में आ गया कि इससे बड़ा बेवकूफ हमको कोई और नहीं मिल सकता। जो आदमी अपने सहारे को नुकसान पहुँचा रहा हो उससे बड़ा बेवकूफ और कौन हो सकता है।

यह सोच कर उन्होंने उसको नीचे उतारा और कहा कि अगर वह उनका कहा मानेगा तो वे उसको इतना अमीर बना देंगे कि फिर उसको ज़िन्दगी भर कोई काम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

उन्होंने उससे यह भी कहा कि हम तुमको एक राजा के महल ले कर चलते हैं जहाँ तुमको बहुत अच्छा खाना मिलेगा बहुत अच्छा

रहने के लिये मिलेगा पर वहॉ तुमको एक शब्द भी बोलना नहीं है केवल हाथ के इशारों से ही बात करनी है।

सो वे उसको राजा के महल ले कर आये और राजा से बोले — "महाराज संयोग से हमको एक बहुत बड़े विद्वान मिल गये हैं जो आपकी बेटी को शास्त्रार्थ में चुनौती देते हैं। यह एक संत हैं और यह अभी तप में हैं इसलिये बोलेंगे नहीं हॉ केवल हाथ के इशारों से ही बात करेंगें शास्त्रार्थ करेंगे।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि कम से कम आज कोई तो मुझे ऐसा आदमी मिला जो मेरी बेटी को चुनौती दे कर उसे हराना चाहता है। मुझे तो लगता था कि मेरी बेटी तो कुँआरी ही रह जायेगी।

सो उस लकड़हारे को राजकुमारी विद्युतमा के सामने लाया गया। उसको यह भी बता दिया गया कि यह आदमी केवल इशारों से ही बात कर के आपसे शास्त्रार्थ करेगा।

विद्युतमा को यह सुन कर कुछ अजीब सा तो लगा पर फिर वह मान गयी। विद्युतमा ने अपने दॉये हाथ की एक उँगली उठा कर उसके सामने की तो उस बेवकूफ ने सोचा कि यह शायद मेरी एक ऑख फोड़ना चाहती है तो क्यों न मैं इसकी दोनों ऑखें फोड़ दूँ यह सोच कर उसने तुरन्त ही उसकी तरफ दो उँगलियॉ उठा दीं।

विद्युतमा ने कहा कि मैंने एक उँगली यह कहने के लिये उठायी कि ईश्वर एक है और उसी एक ने यह दुनियाँ बनायी है। अब आप इनके दो उँगलियाँ उठाने का मतलब समझाइये।

तो वहाँ बैठे लोगों ने उसके दो उँगलियों के उठाने का यह मतलब समझाया कि वह आदमी यह कहना चाहता है कि मैं द्वैतवाद में विश्वास करता हूँ यानी ईश्वर और आत्मा दो को मानता हूँ जिसमें आत्मा ईश्वर का अंश है और ईश्वर ने यह दुनियाँ अकेले नहीं बनायी बल्कि अपनी माया के साथ मिल कर बनायी है।

हालाँकि विद्युतमा को उनकी यह दलील कुछ ज़्यादा जँची तो नहीं पर फिर भी वह चुप हो गयी।

फिर उसने उसको अपनी खुली हुई हथेली दिखायी जिससे वह उसको यह बताना चाहती थी कि प्रकृति में पाँच चीज़ें है। उस बेवकूफ ने सोचा कि अगर यह मुझे थप्पड़ मारना चाहती है तो क्यों न मैं इसे घूँसा मार दूँ सो उसने उसको अपनी बन्द मुट्ठी दिखा दी।

पूछने पर उस आदमी के दोस्तों ने जवाब दिया कि यह कहता है कि प्रकृति में पाँच चीज़ें जरूर हैं पर ये केवल पाँच चीज़ें ही नहीं हैं उनमें उनके पाँच विषय[16] भी हैं।

विद्युतमा इस बात से बहुत प्रभावित हो गयी सो उसने अपनी हार मान ली और उससे शादी कर ली।

[16] Five Indriyaan (senses) are eyes, ears, nose, mouth, tongue and their five subjects are seeing, hearing, smelling, speaking and taste respectively.

शादी के बाद विद्युतमा को पता चला कि उसका पति तो बिल्कुल ही अनपढ़ गॅवार और बेवकूफ है तो वह बहुत झल्लायी और नाराज हुई।

उसने उसकी बेइज़्ज़ती कर के उसको यह कह कर घर के बाहर निकाल दिया कि तुम्हारे दिमाग में तो कीचड़ और पत्थर भरे हैं। जाओ और जब तक तुम पढ़ लिख कर मुझसे बात करने के लायक न हो जाओ तब तक मेरे पास नहीं आना।

अब वह बेवकूफ बेचारा क्या करे। वह बहुत परेशान हुआ तो इधर उधर घूमने लगा। घूमते घूमते वह एक नदी के किनारे आ गया। वहॉ उसने आत्महत्या करने की सोची कि तभी उसने देखा कि कुछ स्त्रियॉ नदी पर कपड़े धो रही हैं।

उसके दिमाग में राजकुमारी विद्योतमा के दो शब्द घूम गये – कीचड़ और पत्थर। उसने देखा कि वह पत्थर जिस पर स्त्रियॉ अपने कपड़े पीट पीट कर धो रही थीं वे बहुत ही चिकने और गोल थे जबकि दूसरे पत्थर बहुत ही खुरदरे थे।

बस उसके दिमाग में यह बात घूम गयी कि जब कपड़े पीटने से एक पत्थर गोल और चिकना हो सकता है तो उसका यह कीचड़ और पत्थर भरा दिमाग शिक्षा से क्यों नहीं बदल सकता।

उसने प्रण किया कि वह भी देश का सबसे विद्वान आदमी बनेगा। और वह वहॉ से गुरू की तलाश में जंगल की तरफ चल

पड़ा। बहुत कम खाना खाते हुए बहुत दिन चलने के बाद उसको एक योगी मिला जो एक बरगद के पेड़[17] के नीचे बैठा था।

वह उस योगी के पैरों में पड़ गया औ उससे उसका आशीर्वाद मॉगा। योगी बहुत दयालु था। उसने उसको फल खाने के लिये दिये। फिर उसने उसे काली देवी का एक मन्त्र दिया और उससे उस मन्त्र का दिन रात काली के मन्दिर में अकेले जाप करने के लिये कहा।

लकड़हारे ने ऐसा ही किया तो एक रात काली देवी ने उसको अपने सबसे भयानक रूप में उसको दर्शन दिये। लकड़हारा डर गया और डर के मारे उसने मन्दिर का दरवाजा बन्द कर दिया।

काली देवी ने उससे मन्दिर का दरवाजा खोलने के लिये कहा तो उस आदमी ने कहा — "मॉ मैं आपको यहॉ तभी घुसने दूँगा जब आप मुझे विद्वान होने का वरदान देंगीं।

काली देवी उसकी सादगी और भक्ति से बहुत प्रसन्न हुई और उसको बहुत बड़ा कवि होने का वरदान दिया। उसी समय से वह विद्वान हो गया और काली के नाम पर उसने अपना नाम कालीदास रख लिया।

इसका एक दूसरा वृत्तान्त यह भी कहा जाता है कि —

[17] Translated for the words "Banyan Tree"

विद्युतमा के घर से निकाले जाने के बाद वह उज्जैन के गढ़कलिका के मन्दिर की तरफ चला गया और वहाँ की देवी से विद्या और ज्ञान देने की प्रार्थना की। इसके लिये उसने देवी को अपनी जीभ की बलि भी दी।

जब वह अपनी जीभ की बलि देने ही वाला था तो देवी उसके सामने प्रगट हुई और उसको अपनी जीभ की बलि देने से रोका और उसको विद्या और ज्ञान का आशीर्वाद दिया।

उस आशीर्वाद के फलस्वरूप उसके मुँह से अक्लमन्दी के शब्द ही निकलने लगे। उसने खुद ही संस्कृत में लिखना और कविता करना शुरू कर दिया।

कुछ समय गुजर जाने के बाद वह अपनी पत्नी के पास गया। वहाँ जा कर उसने दरवाजा खटखटाया तो विद्योतमा ने संस्कृत में उससे पूछा "कौन है?"

तो कालीदास ने शुद्ध संस्कृत में ही उसको जवाब दिया — "मैं हूँ तुम्हारा पति। दरवाजा खोलो।"

पहले तो विद्योतमा को लगा कि इतनी शुद्ध संस्कृत में उससे कौन बात कर रहा है पर फिर वह अपने पति की आवाज पहचान गयी और बहुत खुश हो कर उसने उसके लिये दरवाजा खोल दिया और उसको अन्दर बुलाया। दोनों फिर बहुत दिनों तक खुश खुश रहे।

तो यह थी कालीदास के जीवन की वह घटना जिसने उसको एक ऐसे बेवकूफ लकड़हारे से जो जिस डाली पर बैठा था उसी डाली को काट रहा था "सारे समय का महाकवि"[18] बना दिया और उससे संस्कृत में उच्च कोटि की रचनाऐं लिखवा दीं।

[18] Great Poet of All Time.

6 राजा भर्तृहरि

यह कहानी एक ऐसे आदमी की कहानी है जिसने बहुत कुछ तो नहीं लिखा पर जो कुछ लिखा वह इतना अच्छा लिखा कि उसकी वजह से यह बहुत मशहूर हो गया और आज उसका नाम हम अपनी इस पुस्तक में जोड़ रहे हैं।

और जो कुछ लिखा वह अपने मन की एक ऐसी खास हालत में लिखा कि अगर वह घटना न होती जिसकी वजह से उसके मन की यह हालत हुई तो वह शायद उनकी रचना ही न करता।

इसकी यह लिखाई भी इसके जीवन की कुछ खास घटनाओं पर आधारित है।

इसकी पुस्तकों की हम महाभारत में पायी जाने वाली भग्वद् गीता से तुलना कर सकते हैं। जैसे महर्षि वेद व्यास जी ने भग्वद् गीता अर्जुन के मन की एक खास हालत के लिये लिखी उसी तरह इस आदमी ने भी ये किताबें अपने मन की एक खास हालत में लिखीं।[19]

इसी तरह से अगर उसके मन की हालत वैसी न होती तो शायद उसने इन किताबों की रचना ही न की होती। तो आज जो हम उसकी ये किताबें पढ़ते हैं वह हमको पढ़ने को ही नहीं मिलतीं। सो

[19] Read about these books in “His-3-Beginning of Books” by Sushma Gupta in Hindi available from hindifolktales@gmail.com

उसके मन की ये खास हालतें उसके जीवन की घटनाओं का परिणाम हैं। तो आओ देखते हैं कि उसके जीवन की वे खास घटनाऐं क्या थीं।

इस आदमी का नाम था राजा भतृहरि। कौन थे ये राजा भतृहरि? किस समय के थे? और कहॉ के थे? और कौन सी घटना ने इनकी ज़िन्दगी किस तरह बदल दी?

राजा भर्तृहरि के लिखे हुए तीन शतक[20] मशहूर हैं – नीति शतक, श्रंगार शतक और वैराग्य शतक। इन सबमें संस्कृत में चार चार लाइनों के **100–100** पद हैं इसी लिये इनको शतक का नाम दिया गया है।

ये शतक ऐसे ही नहीं लिखे गये और न इनके नाम भी ऐसे ही रखे गये हैं बल्कि इनके लिखने की भी वजह थी और इनके नाम भी उनके मन की हालत के अनुरूप ही रखे गये।

आज हम तुम्हें इन तीनों शतकों के लिखने की वजह और भर्तृहरि के मन की हालत के बारे में बता रहे हैं कि किन हालात ने उनका जीवन बदला और किन हालात में उन्होंने ये शतक लिखे।

राजा विक्रमादित्य का नाम तो तुम सबने सुना ही होगा। उनकी विक्रम बेताल की कहानियॉ भी पढ़ी होंगी। शायद सिंहासन बत्तीसी भी पढ़ी होगी।

[20] Shatak means 100. All these Shatak contain 100 4-line verses in Sanskrit language.

राजा विक्रमादित्य उज्जैन के राजा थे और इनका राजकाल ईसा से पहले वाली सदी में बताया जाता है। भर्तृहरि राजा विक्रमादित्य के बड़े भाई थे।

पिता गन्धर्वसेन की मृत्यु के बाद उनके सबसे बड़े बेटे शंक को राजा बना दिया गया पर विक्रमादित्य ने उसको मार दिया।

राजा भर्तृहरि राजा विक्रमादित्य के दूसरे बड़े भाई थे सो शंक के बाद भर्तृहरि को राजा बना दिया गया। इनको उज्जैन का राज्य देवताओं के राजा इन्द्र और धारा नगरी के राजा से विरासत में मिला था।

एक बार राजा भर्तृहरि को पता चला कि उनके राज्य में चोर डाकू और जंगली जानवरों का ज़ोर कुछ ज़रा ज़्यादा ही बढ़ गया है सो वह खुद उन सबसे निपटने के लिये जंगल चले गये।

जब वे जंगल से लौट रहे थे तो रास्ते में उनको एक बहुत सुन्दर लड़की मिली। भर्तृहरि उसकी तरफ आकर्षित हो गये और उसको अपनी रानी बना कर घर ले आये। उस लड़की का नाम था पिंगला।[21]

उससे प्यार के लिये समय निकालने के लिये उन्होंने लड़ाई की देखभाल करने के लिये अपना एक आदमी तैनात किया हुआ था। उसका नाम था महीपाल।

[21] Kalidas, one of the nine gems of Vikramaditya's court, says that her name was Anangsenaa,

पिंगला से शादी करने के बाद भर्तृहरि उस समय उसके प्यार में इतने ज़्यादा डूबे हुए थे कि वह खुद उसकी सुन्दरता का गुलाम बन कर रह गये थे और उनका प्यार पिंगला के लिये एक बन्धन बन गया था। सो कुछ दिन तक तो सब ठीक चला पर फिर वह महीपाल की तरफ आकर्षित हो गयी।

तीनों खुश थे कि एक दिन...

उज्जयिनी में राजमहल के पास ही एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। वे दोनो अपने दिन बहुत ही गरीबी में गुजार रहे थे कि एक दिन उस ब्राह्मण को कल्प वृक्ष का एक फल मिल गया।

ब्राह्मण ने सोचा कि वह उस फल को खुद खा कर क्या करेगा। उसे राजा को दे कर कुछ धन ले लेगा जिससे उसकी गरीबी दूर हो जायेगी सो वह उस फल को राजा भर्तृहरि के पास ले गया और उसके गुण बता कर उसको दे दिया।[22]

राजा भर्तृहरि ने उससे वह फल ले लिया और उसको उस फल के बदले में जितना सोना वह ले जा सकता था दे दिया। राजा भर्तृहरि ने वह फल अपनी सबसे प्रिय रानी पिंगला को दे दिया ताकि वह हमेशा सुन्दर और जवान बनी रहे।

रानी ने एक बार कहा भी कि या तो इसे तुम खा लो या फिर हम दोनों मिल कर इसको खाते हैं पर राजा भर्तृहरि बोले कि वह

[22] Some say that Guru Gorakhnath Ji himself came in his kingdom and gave him the fruit to feed his queen so that she will always remain young and beautiful, not the Braahman.

फल केवल एक आदमी के लिये ही था इसलिये उसको वही खा ले।

अब रानी पिंगला तो राजा के सेनापति महीपाल को प्यार करती थी सो राजा भर्तृहरि के जाने के बाद पिंगला ने महीपाल को बुलाया और वह फल उसको दे दिया ताकि उसका प्रेमी हमेशा सुन्दर और जवान रह सके।

उधर महीपाल एक लखा नाम की वेश्या के पास जाया करता था सो उस फल के गुण उसको बता कर उसने वह फल उसको दे दिया ताकि वह हमेशा सुन्दर और जवान रहे।

लखा ने सोचा कि यह फल तो राजा के खाने के काबिल है मैं इसको खा कर क्या करूँगी। मैं तो वेश्या हूँ मेरी तो ज़िन्दगी ही बेकार है राजा तो सारी प्रजा को देखता सो वह फल उसने राजा भर्तृहरि को दे दिया।

जैसे ही राजा ने फल की तरफ देखा तो उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। उसने लखा से पूछा कि वह फल उसको कहॉ से मिला। उसने उसको बताया कि वह फल उसको उनके सेनापति ने दिया।

राजा ने तुरन्त ही सेनापति को बुलवाया और उससे पूछा कि उसको वह फल कहॉ से मिला। सेनापति पहले तो घबरा गया पर फिर उसने बताया कि वह फल उसको रानी पिंगला ने दिया।

यह सुन कर राजा को धन और प्रेम दोनों ही बेकार लगे। उसने दुनियॉ छोड़ने का विचार कर लिया पर जाने से पहले रानी से एक बार मिलना ठीक समझा।

उसने रानी से पूछा तुमने उस फल का क्या किया जो मैंने तुम्हें खाने के लिये दिया था। रानी को किसी बात का कुछ पता नहीं था सो वह बोली "मैंने तो वह फल खा लिया।"

इस पर उसने रानी को वह फल दिखा कर कहा "पर यह तो मेरे पास है।" यह सुन कर रानी के मुॅह से तो एक शब्द भी नहीं निकला। राजा भर्तृहरि ने उसी समय रानी को मरवा दिया और वह फल धो कर खा लिया।

पिंगला को मरवाने के बाद राजा भर्तृहरि को यह सारा संसार सारहीन लगा और उसके बाद बिना किसी से बात किये अपना राजपाट अपने छोटे भाई विक्रम को दे कर सन्यासी बन गये।

तीन शतकों की रचना

राजा भर्तृहरि ने तीन शतकों की रचना की है – नीति शतक, श्रंगार शतक और वैराग्य शतक।

जब वह राजा बने तो उनके बाबा इन्द्रदेव ने उन्हें और विक्रमदित्य को राजनीति सिखायी तो उन्होंने राजा के कर्तव्यों और राजनीति पर नीति शतक लिखा।

बाद में वह पिंगला को अपनी रानी बना कर महल ले आये। पिंगला बहुत सुन्दर थी इसलिये राजा भर्तृहरि उसको बहुत प्यार करते थे। उसकी ओर वह इतने अधिक आकर्षित थे कि उसके प्रेम में पड़ कर उन्होंने "श्रंगार शतक" की रचना की।

इस शतक में उनके पिंगला से अलग होने पर उनके मानसिक रूप से उससे अथाह प्रेम की झलक मिलती है। कहते हैं कि यह शतक उन्होंने हिमालय की तराई में बैठ कर लिखा था।

राजा भर्तृहरि पिंगला की बेवफाई की घटना से इतने दुखी हो गये कि उनका मन संसार से हट गया तो आखीर में उन्होंने "वैराग्य शतक" की रचना की।

इन सारे शतकों में उन्होंने चार चार लाइन के **100** श्लोक लिखे हैं।

इस तरह इन तीन मनोवस्थाओं में उन्होंने तीन शतकों की रचना की जो आज भी संस्कृत भाषा की तीन बहुत ही उत्कृष्ट रचनाऐं मानी जाती हैं।

तो राजा भर्तृहरि के जीवन की ये कुछ ऐसी घटनाऐं थीं जिन्होंने उनको इन तीन रचनाओं का रचयिता को राजा प्रेमी और वैरागी बना कर इतना मशहूर कर दिया।

7 संत तुलसी दास

तुलसी दास जी का नाम कौन नहीं जानता। इनकी लिखी रामायण या राम चरित मानस उत्तर भारत के हिन्दी पढ़े जाने वाले घर घर में पढ़ी जाती है।

ये श्रीराम के इतने बड़े भक्त थे कि भगवान श्रीराम ने इनको अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ चित्रकूट में दर्शन दिये थे। इनकी उम्र भी बहुत थी ये **123** साल तक ज़िन्दा रहे।

इन्होंने केवल श्रीराम के बारे में ही लिखा है। वैसे तो इन्होंने श्रीराम के बारे में कई पुस्तकें लिखी हैं पर इनकी लिखी हुई सारी पुस्तकों में इनकी रामचरित मानस और हनुमान जी के बारे में लिखी हुई हनुमान चालीसा सबसे ज़्यादा मशहूर हैं और सबसे ज़्यादा पढ़ी जाती हैं।

यहॉ तक ये कैसे पहुँचे आज हम तुम्हें यही बताने जा रहे हैं। कहते हैं न कि किसी पुरुष के बड़े होने में किसी न किसी स्त्री का हाथ होता है। ऐसा ही कुछ मामला यहॉ भी था।

तो आओ पढ़ते हैं कि वह स्त्री कौन थी जिसने इनको इतना बड़ा राम का भक्त और भारत का महाकवि बना दिया जिनकी लिखी हुई रामचरित मानस और हनुमान चालीसा आज भी हिन्दी भारत के घर घर में पढ़े सुने जाते हैं।

जब ये पैदा हुए थे तब इनके पिता ने इनका नाम रामबोला रखा था क्योंकि जन्मते ही इनके मुँह से राम शब्द निकला था।

जब ये बड़े हो गये तो इनके माता पिता ने एक अच्छे से घर की एक अच्छी सी लड़की देख कर इनकी शादी कर दी। ये अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते थे। उसको कहीं इधर उधर नहीं जाने देते थे।

एक बार इनकी पत्नी को किसी काम से अपने मायके जाना पड़ा तो दो चार दिन तो ठीक रहा पर फिर इनको उसकी याद सताने लगी। सो इन्होंने उससे मिलने का विचार किया और चल दिये उससे मिलने।

इनके और उसके गॉव के बीच में एक नदी पड़ती थी। उन दिनों बरसात के दिन थे सो नदी खूब चढ़ी हुई थी। रात का समय था कोई नाविक भी दिखायी नहीं दे रहा था जो उनको वह नदी पार करा ले जाता।

उन्होंने इधर देखा उधर देखा कि उनको नदी पार करने का कोई साधन मिल जाये जिससे वे उस नदी को पार कर सकें तभी उनको नदी में बहती हुई एक लाश दिखायी दे गयी।

उन्होंने उस लाश को लकड़ी का एक लट्ठा समझा तो उन्होंने उसको पकड़ लिया और उसके सहारे तैर कर नदी के दूसरे किनारे की तरफ जाने लगे।

नदी पार करने के बाद वह अपनी पत्नी के घर पहुँचे तो रात के समय दामाद जी का घर का दरवाजा खुलवा कर घर में घुसने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था सो उन्होंने छत पर से चढ़ कर घर में घुसने का विचार किया।

अब वह छत पर चढ़ें कैसे। उन्होंने फिर इधर उधर देखा कि कोई चीज़ उनको ऐसी मिल जाये जिसको पकड़ कर वह छत पर चढ़ जायें।

पास में ही एक मरा हुआ सॉप पड़ा था। वह उनको एक रस्सी लगी सो उन्होंने उस मरे हुए सॉप को उठा कर रस्सी की तरह इस्तेमाल कर के उससे छत पर चढ़ गये।

छत पर चढ़ कर वह बहुत खुश हुए और तुरन्त ही अपनी पत्नी के कमरे में पहुँचे। पत्नी इस तरह अचानक रात को पति को अपने कमरे में देख कर आश्चर्य में पड़ गयी। उसको शर्म भी बहुत आयी कि अगले दिन वह अपने घर वालों से क्या कहेगी।

उसने तुलसीदास से कहा — "जितना प्रेम तुम्हारा मेरे प्रति है अगर उससे दसवॉ हिस्सा भी तुम्हारा प्रेम श्रीराम के चरणों में होता तो तुम्हारा यह जीवन धन्य हो गया होता।"

पत्नी के इस वाक्य ने तुलसीदास जी की ऑखें खोल दीं। वह तुरन्त ही वहॉ से वापस चल दिये।

बाद में उनको पता चला कि जिस चीज़ को उन्होंने लकड़ी का लट्ठा समझ कर नदी पार की थी वह लकड़ी का लट्ठा नहीं था बल्कि

एक लाश थी। इसके अलावा जिस चीज़ को वह रस्सी समझ कर पत्नी के घर की छत पर चढ़े थे वह रस्सी नहीं बल्कि एक मरा हुआ सॉप था।

ये दोनों ही बातें जान कर और सोच कर उनको अपने मन में बहुत ग्लानि हुई और वह अपने आपको अपने पत्नी प्रेम की वजह से धिक्कारने लगे। उसके बाद उन्होंने श्रीराम के चरणों में अपना मन लगाया और श्रीराम के बारे में बहुत कुछ लिखा।

यही वह घटना थी जिसने उनको आज का बहुत बड़ा संत कवि और श्रीराम भक्त बना दिया। अगर उनकी पत्नी ने उस रात उनसे वह वाक्य न कहा होता तो आज वह वह न होते जो आज हैं।

8 स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म **1863** में भारतवर्ष के बंगाल प्रान्त के कलकत्ता शहर में हुआ था। इनका जन्म दिन भारत में "राष्ट्रीय युवा दिन"[23] के रूप में मनाया जाता है।

इनकी मृत्यु बहुत छोटी उम्र में ही हो गयी थी, **1902** में जब ये केवल **39** साल के थे। इन्होंने पहले से ही अपने बारे में यह कह रखा था कि ये **40** साल तक भी ज़िन्दा नहीं रह पायेंगे। इनका असली नाम नरेन्द्रनाथ दत्ता था और ये रामकृष्ण परमहंस जी के मुख्य शिष्यों में से एक थे।

स्वामी विवेकानन्द जी धर्म की एक कौनफ्रैन्स में **1893** में शिकागो में भाषण देने के लिये गये थे। वे जब **1893** में वहॉ गये थे तब केवल विवेकानन्द के नाम से ही गये थे। स्वामी का नाम उनको खेतरी के अजीत सिंह[24] ने दिया था।

वहॉ जाने से पहले उनकी मॉ ने उनका इम्तिहान लिया कि वे देश से बाहर जाने के लिये तैयार थे भी या नहीं।[25] इस इम्तिहान में पास होने के बाद वे जयपुर के महाराज के पास उनके महल में रुके।

---

[23] National Youth Day

[24] Ajit Singh of Khetari, Rajasthan

[25] Read this story and many other stories about him in the Book "His-2-Our Great People", by Sushma Gupta in Hindi language. Available from hindifolktales@gmail.com

विवेकानन्द जी रामकृष्ण परमहंस जी के शिष्य थे सो महाराज जयपुर ने उनका बड़ी धूमधाम से स्वागत किया और उनके स्वागत में एक उत्सव का आयोजन भी किया। उस उत्सव में उन्होंने वेश्याओं को भी बुलाया हुआ था।

महाराजा जयपुर उस समय शायद यह भूल गये थे कि इस प्रकार के आदमी के स्वागत में उनको वेश्याओं को नहीं बुलाना चाहिये था।

वैसे भी तब तक विवेकानन्द जी पूरे सन्यासी भी नहीं बने थे सो उनकी कामनाऐं अभी पूरी तरह से उनके नियंत्रण में भी नहीं थीं इसलिये जब उन्होंने उन वेश्याओं को देखा तो वे अपने कमरे में जा कर बैठ गये और अपना कमरा बन्द कर लिया।

महाराज जयपुर ने जब यह देखा तो उनको लगा कि उनसे कहीं गलती हो गयी है और उन्होंने विवेकानन्द जी से माफी मॉगी।

फिर भी उन्होंने एक वेश्या की तरफ इशारा कर के उनसे कहा कि दूसरी वेश्याओं को तो पैसे पहले से ही दे दिये गये हैं पर यह वेश्या देश की सबसे बड़ी वेश्या है। अगर इसको ऐसे ही भेज दिया जायेगा तो यह इसका बहुत बड़ा अपमान होगा। आप बाहर तो आयें।

विवेकानन्द जी अपने कमरे से बाहर आने में डर रहे थे कि उस वेश्या ने दुखी होते हुए एक गीत गाना शुरू किया। वह एक ऐसा

गीत गा रही थी जो एक सन्यासी के लिये गाया जाता है। उसका गीत बहुत सुन्दर था जिसका मतलब था —

"मुझे मालूम है कि मैं तुम्हारे लायक नहीं हूँ पर फिर भी कम से कम तुम तो मुझसे अच्छा व्यवहार कर सकते थे। मुझे यह भी मालूम है कि मैं रास्ते की धूल हूँ पर तुमको मेरे साथ इतनी निर्दयता का व्यवहार नहीं करना चाहिये। मैं तो कुछ भी नहीं हूँ एक अज्ञानी हूँ पापी हूँ पर तुम तो एक पवित्र आत्मा हो तो फिर तुम मुझसे क्यों डरते हो।"

विवेकानन्द जी ने उसका यह गीत अपने कमरे के अन्दर से ही सुना तो उनकी अन्तरात्मा ने उनको धिक्कारा कि वे उसके साथ यह कैसा व्यवहार कर रहे थे।

उन्होंने तुरन्त ही अपने कमरे का दरवाजा खोल दिया और कमरे से बाहर आ कर बैठ गये। उनको लगा कि आज एक वेश्या ने एक सन्यासी को हरा दिया था।

उस दिन उन्होंने अपनी डायरी में लिखा "आज मुझे ईश्वर से एक नयी रोशनी मिली। मैं उससे बहुत डरा हुआ था। जरूर ही मेरे अन्दर कोई इच्छा रही होगी जिसकी वजह से मैं उससे डर गया था।

पर लगता है कि उसका मन मेरे मन से ज़्यादा साफ था इसी लिये उसने मुझे हरा दिया। मैंने ऐसी पवित्र और शुद्ध आत्मा पहले कभी कहीं नहीं देखी। अब मुझे उससे कोई डर नहीं है।"

और उस दिन एक वेश्या से विवेकानन्द जी को तटस्थ रहने का ज्ञान मिला जिससे वे सच्चे अर्थों में सन्यासी बन गये।

इस तरह एक वेश्या के एक गीत ने स्वामी विवेकानन्द जी का जीवन एक ऐसे रास्ते पर डाल दिया जिसको अपनाने के लिये शायद उन्हें न जाने कितनी कोशिशें करनी पड़तीं और फिर भी इस बात का कोई यकीन नहीं था कि वह उस रास्ते पर पहुँच ही जाते।

इस तरह इनको सच्चा सन्यासी बनाने में इनकी ज़िन्दगी का रुख बदलने में भी एक स्त्री का ही हाथ था।

9 प्रभुपाद जी[26]

यह एक ऐसे आदमी की कहानी है जिसकी अपनी ज़िन्दगी तो बदल ही गयी बल्कि इन्होंने तो दुनियॉ भर में तूफान खड़ा कर दिया।

प्रभुपाद जी कलकत्ता के रहने वाले थे और इनका जन्म वहीं **1876** में हुआ था। इनकी शिक्षा पश्चिमी शिक्षा पद्धति से हुई थी। इनका विवाह **22** साल की उम्र में **11** साल की एक लड़की से हो गया था और **14** साल की उम्र में उसके पहला बेटा हुआ।

शिक्षा के बाद इन्होंने कुछ लिखना शुरू किया तो एक दिन इनकी पत्नी ने इनकी लिखी हुई एक पुस्तक की हस्तलिपि बेच कर उसकी चाय खरीद ली। जब इन्हें इस बात का पता चला तो ये बहुत नाराज हुए और उनसे पूछा कि क्या तुम्हारी चाय मुझसे अधिक मूल्यवान थी। उसने कहा हॉ।

प्रभुपाद ने **1950** तक अपनी पत्नी को बहुत समझाया कि वह उनके काम में उनकी सहायता करे पर वह नहीं मानी पर इनको तो कृष्ण का नाम फैलाना था। इनके पास इतने पैसे नहीं थे कि ये खुद ही अपने पैसे से कहीं जा सकें।

ये मृदंग बहुत अच्छा बजाते थे। एक बार इनको महारानी सिंधिया के दरबार में मृदंग बजाने का मौका मिला। महारानी

[26] Abhaya Charanarvind Bhaktivedanta Swami Prabhupad (AC Bhaktivedanta Swami Prabhupad)

सिंधिया को इनका मृदंग बहुत पसन्द आया तो इन्होंने उनको अपने अमेरिका भेजने पर तैयार कर लिया।

जब प्रभुपाद जी अमेरिका जाने के लिये तैयार हो गये तो उन्होंने पूछा कि उनको किस किस चीज़ की आवश्यकता होगी। प्रभुपाद जी ने कहा "मुझे तो बस आप जहाज़ में एक सीट दिलवा दें।"

फिर भी महारानी सिंधिया ने उनसे कहा — "आपके लिये आपकी यात्रा का इन्तजाम तो मैं करवा दूँगी पर अमेरिका पहुँचने के बाद आपको अपना ख्याल तो आपको अपने आप ही रखना पड़ेगा।"

प्रभुपाद जी राजी हो गये और रानी सिंधिया ने अपने जहाज़ में अमेरिका के लिये एक सीट उनको दिलवा दी। बस एक बार उनका वहाँ पहुँचना था तो फिर तो ये अपने मिशन में लग गये। वहाँ जा कर इन्होंने इस्कौन[27] की स्थापना की।

आज इसकी शाखाऐं सारे संसार में फैली हुई हैं। सो यह था उस मृदंग बजाने का कामल। महारानी सिंधिया ने इणको पहचाना अमेरिका भेजा और यह बीज तो बरगद के पेड़ की तरह हो गया। इसका अपना ही एक धर्म फैल गया।

[27] International Society of Krishna Consciousness (ISCON)

Books in History Series

1. **Lone Country of Thirteen Months. 12 articles. 168 p.**
   तेरह महीनों का अकेला देश

2. **Our Great People. 22 people. 164 p.**
   हमारे महान लोग

3. **Beginnings of the Books. 12 books. 148 p.**
   पुस्तकों के आरम्भ की कहानियॉ

4. **Our Great Scientists. 12 scientists. 70 p**
   हमारे महान वैज्ञानिक

5. **One Event Changed the Life. 9 people. 64 p.**
   जिनके एक घटना ने जीवन बदले

6. **Lobo's Ethiopia of 1625.**
   1625 का लोबो का इथियोपिया

7. **Birth of Proverbs. 23 proverbs. 134 p**
   कहावतों का जन्म

8. **Stories of Birbal. 25 stories. 80 p.**
   बीरबल की कहानियॉ

9. **Raja Rasalu. 21 stories. 368 p.**
   राजा रसालू

शीबा की रानी मकेडा, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
राजा सोलोमन, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ

Updated in 2022

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Jun, 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2020